मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ

एक अच्छे छोटे लड़के की कहानी

आलोचनात्मक यथार्थवाद की धारा की अभिव्यक्तियाँ उतने ही किस्म की थीं जितने किस्म के आलोचनात्मक यथार्थवादी थे। सब अनूठे। लेकिन इनमें भी मार्क ट्वेन का स्थान अद्वितीय है। मार्क ट्वेन ने सम्पत्ति-केन्द्रित समाज के मूल्यों, संस्कृति और रूढ़ियों पर चोट की।

वह आलोचनात्मक यथार्थवाद की कोई कड़ी न होकर उसके ऐसे पुरोधा हैं जो स्वयं एक ध्रुव तारे के समान हैं।

आज हमारे समाज में जैसी रूढ़ियाँ हैं, उसके मद्देनज़र हम महसूस करते हैं कि मार्क ट्वेन जिस तीखी और मारक शैली में रूढ़ियों पर चोट करते हैं, उन्हें यहाँ पढ़ने का एक विशेष महत्व है। भारतीय समाज उपभोक्ता सामग्रियों के इस्तेमाल में तो अव्वल है, लेकिन अपनी रूढ़ियों और दकियानूसी विचारों में भी उसे अव्वल कहा जा सकता है। ऐसे में मार्क ट्वेन की ये दो कहानियाँ विशेष तौर पर प्रासंगिक हैं। 1875 में लिखी गयी इन क़हानियों में नैतिकता के आदर्श और असल ज़िन्दगी के फर्क को दिखला कर, खोखली नैतिक शिक्षाओं पर चोट की गई है।

–सम्पादक

एक बार की बात है कि एक अच्छा लड़का था जिसका नाम जैकब ब्लिवेंस था। वह हमेशा अपने माता-पिता की बात मानता था, चाहे उनकी मांगें कितनी भी बेहूदा और नावाजिब क्यों न हों। वह हमेशा अपनी किताब पढ़ता था, और रविवारी स्कूल में कभी भी देर से नहीं पहुँचता था। वह कभी हूकी नहीं खेलता था, तब भी जब उसका संयमित निर्णय उसे यह बताता था कि इससे फायदेमन्द और कोई चीज़ वह नहीं कर सकता है। वह इतने अजीब तरीके से हर काम करता था कि कोई भी दूसरा लड़का उसका मतलब नहीं समझ पाता था। झूठ बोलना चाहे जितना भी आसान हो, वह कभी झूठ नहीं बोलता था। वह बस इतना कहता था कि झूठ बोलना ग़लत है, और बस यही उसके लिए काफ़ी था। और साथ ही वह मज़ाकिया होने की हद तक ईमानदार था। जैकब के अजीबो-ग़रीब तरीके सारी हदों को पार कर जाते थे। वह रविवार को कंचे नहीं खेलता था, वह पक्षियों के घोंसलों को तबाह नहीं करता था, वह ऑर्गन बजाने वाले मदारियों के बन्दरों को गर्म मूँगफलियाँ नहीं देता था; वह किसी भी तरह के तार्किक मनोरंजन में कोई दिलचस्पी नहीं लेता था। इसलिये दूसरे लड़के उसका तर्क ढूँढने और उसे समझने की जी-तोड़ कोशिश में लगे रहते थे, लेकिन वे किसी सन्तोषजनक नतीजे तक नहीं पहुँच पाते थे। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, वे केवल इस धुंधले से अन्दाज़े तक ही पहुँच पाते थे कि वह "पीड़ित" है। वे उसे सुरक्षा देते थे और उसे कभी कोई नुकसान नहीं होने देते थे।

यह अच्छा छोटा लड़का रविवारी स्कूल की सभी किताबें पढ़ता था; उसमें उसे सबसे अधिक मज़ा आता था। इन्हीं किताबों में सारा रहस्य छिपा था। वह रविवारी स्कूल की किताबों में बताए गए छोटे अच्छे लड़कों में विश्वास करता था; उसका उनमें बड़ा विश्वास था। वह उनमें से किसी एक जीवित लड़के से सिर्फ़ एक बार मिलना चाहता था; लेकिन उसे ऐसा कोई लड़का कभी नहीं मिला। वे सभी शायद उसका युग आने से पहले ही मर चुके थे। जब वह किसी विशेष रूप से अच्छे लड़के के बारे में पढ़ता तो तुरन्त पन्ने पलटते हुए पीछे पहुँच जाता ताकि यह जान सके कि उस लड़के का आख़िर में हुआ क्या, क्योंकि वह किसी भी तरह उनसे मिलना चाहता था; लेकिन इसका कोई लाभ नहीं होता था; क्योंकि अच्छे छोटे लड़के हमेशा आखिरी अध्याय में मर जाते थे और अन्तिम संस्कार का एक दृश्य होता था, जिसमें उसके सभी रिश्तेदार होते थे और काफ़ी छोटी पतलूनों और काफ़ी बड़ी टोपियों में रविवारी स्कूल के बच्चे मौजूद होते थे और हर कोई डेढ़ गज लम्बे रुमाल चेहरे पर लगाए रो रहा होता था। वह हमेशा इसी नतीजे पर पहुँचता था। वह कभी ऐसे अच्छे लड़कों को नहीं देख पाया क्योंकि वे हमेशा अन्तिम अध्याय में मर जाते थे।

जैकब की यह नेक महत्वाकांक्षा थी कि वह भी रविवारी स्कूल की किताबों में दर्ज हो जाए। वह उसमें ऐसी तस्वीरों के साथ चित्रित होना चाहता था जिसमें उसे गौरवशाली ढंग से अपनी माँ से झूठ बोलने से इंकार करते हुए, और उसकी मां को इस बात पर खुशी से रोते हुए दिखलाया गया है। उसमें ऐसे चित्र होंगे जो उसे दरवाजे पर खड़ी छः बच्चों वाली एक ग़रीब भिखारन को एक टका देते हुए, उसे मुक्त रूप से खर्च करने को, लेकिन फ़िजूलखर्च न होने की नसीहत देते हुए दिखलाया गया है, क्योंकि फ़िजूलख़र्ची पाप होती है। ऐसे चित्र भी होंगे जो उसे उदारतावश उस बुरे लड़के की शिकायत करने से इंकार करते हुए दिखलाएँगे जो हमेशा स्कूल से लौटते समय एक कोने में उसका इन्तज़ार करता रहता है, और जो एक फट्टी से उसके सिर पर चोट करता है और फिर घर तक "ही!ही!" करते हुए उसका पीछा करता है। यह थी जैकब ब्लिवेंस की चाहत। वह रविवारी स्कूल की किताब में दर्ज होना चाहता था। इस बात से कभी-कभी उसे थोड़ी दिक्कत का अनुभव होता था कि अच्छे छोटे लड़के हमेशा मर जाते हैं। उसे जीने से प्यार था, और आप समझ ही सकते हैं कि रविवारी स्कूल की किताब का अच्छा बालक होने का सबसे अप्रिय पहलू यही था। वह जानता था कि इतना अच्छा होना स्वास्थ्य के लिए अच्छा न था। वह जानता था कि किताबों में चित्रित लड़कों की हद तक दैवीय रूप से अच्छा होना क्षय से भी ज़्यादा ख़तरनाक था। वह जानता था कि उनमें से कोई भी

बहुत दिनों तक टिक नहीं पाया था, और यह सोचकर उसे काफ़ी तकलीफ़ होती थी कि अगर लोगों ने उसे रविवारी स्कूल की किताब में दर्ज भी किया तो वह उसे कभी नहीं देख पाएगा, या अगर वह किताब उसके मरने से पहले छप भी जाए तो उसके अन्त के अध्यायों में अन्तिम संस्कार के दृश्य के बिना वह इतनी लोकप्रिय नहीं हो पाएगी। अगर उस रविवारी स्कूल की किताब में जनसमुदाय को उसके द्वारा मरते हुए दी गई सलाह नहीं होती तो वह रविवारी स्कूल की किताब कैसे कहलाती। इसलिए अन्ततः, जाहिर है, कि उसने यही मन बनाया कि मौजूदा परिस्थितियों में जो उससे बन पड़ेगा वह करेगा—वह सही तरीके से जियेगा, और दृढ़ता से जब तक कर सकेगा ऐसा ही करता रहेगा और अपना समय आने से पहले ही अपने मरते समय वाला भाषण तैयार रखेगा।

लेकिन पता नहीं कैसे इस अच्छे छोटे लड़के साथ कुछ भी सही नहीं होता था। उसके साथ कभी भी वैसा नहीं होता था जैसा कि किताब वाले छोटे अच्छे लड़कों के साथ होता था। उनका समय हमेशा अच्छा चलता था जबकि बुरे लड़के अपनी टाँगें तुड़ा बैठते थे; लेकिन इस मामले में कहीं कोई पेंच ढीला था। सबकुछ ठीक इसका उल्टा होता था। जब उसने जिम ब्लेक को सेब चुराते देखा तो वह उसे उस बुरे लड़के के बारे में पढ़कर सुनाने के लिए पेड़ के नीचे गया जो पड़ोसी के सेब के पेड़ से गिरकर अपनी बाँह तुड़ा बैठा था। जिम भी पेड़ से गिरा लेकिन वह जैकब के ऊपर ही गिर पड़ा, और जैकब की बाँह टूट गयी, जबकि जिम का बाल भी बाँका न हुआ। जैकब कुछ समझ नहीं पाया। किताबों में तो ऐसा कुछ भी नहीं था।

और एक बार, जब कुछ बुरे लड़कों ने एक अंधे को धक्का देकर कीचड़ में गिरा दिया तो जैकब उसकी मदद करने और उसकी दुआएँ पाने के लिए दौड़ा, लेकिन उसे अंधे ने उसे कोई दुआ नहीं दी, बल्कि उसके सिर पर छड़ी से मारा और कहा कि अगली बार वह उसे धक्का देकर गिराने और फिर मदद करने का नाटक करने से पहले पकड़ना चाहेगा। यह भी किताबों के मुताबिक नहीं हुआ। जैकब ने ऐसी कोई घटना ढूँढने के लिए उन्हें शुरू से अन्त तक पलट डाला।

एक चीज़ जो जैकब करना चाहता था वह था किसी ऐसे लंगड़े कुत्ते को ढूँढना जिसके पास कोई ठिकाना न हो, जो भूखा हो और सताया गया हो, और उसे वह घर लाकर पालना चाहता था और उस कुत्ते का जीवनपर्यन्त आभार हासिल करना चाहता था। आख़िर में उसे एक ऐसा कुत्ता मिल ही गया। वह काफ़ी खुश था। वह उसे घर ले आया, उसे खाना खिलाया, लेकिन जब वह उसे पालतू बनाने जा रहा था तो वह उसपर झपट पड़ा और उसके सामने के कपड़ों को छोड़कर उसके सारे कपड़े फाड़ दिए, और उसका ऐसा हश्र कर दिया जो सबके लिए एक मनोरंजक नज़ारा बन गया। उसने फिर से किताब के लेखकों की जाँच की, लेकिन मामला समझ नहीं पाया। वह उसी नस्ल का कुत्ता था जिसके बारे में किताबों में बताया गया था, लेकिन उसने बड़े अलग तरीके से व्यवहार किया। यह लड़का कुछ भी करता था तो मुसीबत में फँस जाता था। वही चीज़ें जिनके लिए किताबों वाले लड़कों को ईनाम मिलता था, उसके लिए सबसे नुकसानदेह चीज़ें बन जाती थीं।

एक बार, वह रविवारी स्कूल जा रहा था, उसने देखा कि कुछ बुरे लड़के एक नाव में सवारी का मज़ा लूटने की तैयारी कर रहे हैं। वह आतंक से भर गया, क्योंकि अपने अध्ययन से वह जानता था कि रविवार के दिन नदी की सैर करने वाले सभी लड़के निरपवाद रूप से डूब जाते हैं। इसलिए वह एक बेड़े पर उन्हें चेतावनी देने के लिए दौड़ पड़ा लेकिन एक लट्ठा उसके साथ मुड़ा और वह नदी में गिर गया। एक आदमी ने काफ़ी जल्दी उसे बाहर निकाल लिया, और डॉक्टर ने उसका पानी बाहर निकाल कर उसके फेंफड़ों में नयी जान भरी, लेकिन उसे ठण्ड लग गयी और वह नौ सप्ताह तक बिस्तर पर बीमार पड़ा रहा। लेकिन सबसे बेतुकी बात यह थी कि नाव वाले बुरे लड़कों ने सारे दिन मौज की और फिर आश्चर्यजनक रूप से, घर ज़िन्दा और स्वस्थ पहुँचे। जैकब ब्लिवेंस ने कहा कि ऐसी कोई चीज़ तो किताबों में नहीं है। वह एकदम अचम्भित था।

जब वह ठीक हुआ तो वह थोड़ा हतोत्साहित था, लेकिन फिर भी उसने किसी भी तरह प्रयास जारी रखने का संकल्प लिया। वह जानता था कि अब तक उसका जो अनुभव रहा है वह रविवारी स्कूल की किताब में दर्ज होने के लायक नहीं है, लेकिन अभी वह अच्छे छोटे लड़कों को मिले जीवनकाल के अन्त तक नहीं पहुँचा है, और उसने उम्मीद की कि वह अगर वह अपना समय आने तक डटा रहता है तो शायद वह कोई दर्ज होने लायक काम कर ले। अगर हर चीज़ असफल हो जाती है तो अन्त में वह अपने मृत्युकालीन भाषण के आश्रय में जाएगा।

उसने किताबों को जाँचा और पाया कि अब समय आ गया है कि वह एक केबिन ब्वॉय के रूप में समुद्री जहाज पर जाए। वह एक जहाज के कप्तान से मिला और उसे अपनी अर्ज़ी दी, और जब उस कप्तान ने सिफ़ारिश के लिए पूछा तो उसने गर्व के साथ एक निबन्धिका निकाली और इन शब्दों की ओर इशारा किया, "जैकब ब्लिवेंस के लिए, उसके प्रेमपूर्ण शिक्षक की ओर से।" लेकिन कप्तान एक गँवारू, भद्दा आदमी था, और उसने कहा, "ओह, ये क्या बकवास है! यह तो कोई सबूत नहीं हुआ कि तुम तश्तरियाँ धुल सकते हो या कीचड़ भरी बाल्टी उठा सकते हो, और मेरे ख़याल से मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।" यह जैकब के जीवन में हुई सबसे असाधारण घटनाओं में से एक थी। किसी निबन्धिका पर किसी शिक्षक की ओर से प्रशंसा कभी भी जहाज़ कप्तानों के कोमलतम भावों को प्रभावित करने में असफल नहीं होती थी, और वह सभी सम्मानजनक और लाभदायक कार्यालयों के दरवाज़े खोल देती थी—उसके द्वारा पढ़ी गई किसी भी किताब में ऐसी घटना नहीं थी। उसे बड़ी मुश्किल से अपनी आँखों पर विश्वास हुआ।

इस लड़के को इस मामले में हमेशा बड़ी उलझन होती थी। उसके लिए कभी भी कुछ भी उन किताबों के अनुसार नहीं होता था। अन्ततः एक दिन, जब वह चेतावनी देने के लिए बुरे लड़कों की खोज में निकला हुआ था, तो उसे एक पुराने लोहे के ढलाईखाने में पर्याप्त मात्रा में ऐसे लड़के मिले जो चौदह-पन्द्रह कुत्तों के साथ एक मज़ाक कर रहे थे, जिन्हें उन लड़कों ने एक लम्बी कतार में बाँध रखा था, और उन्हें नाइट्रो-ग्लिसरीन के डिब्बों से सजाने जा रहे थे। उसने सबसे आगे वाले कुत्ते को गर्दन से पकड़ा और अपनी धिक्कार भरी निगाह बदमाश टॉम जोंस पर

एक बुरे छोटे लड़के की कहानी

एक बार की बात है कि एक छोटा बुरा लड़का था जिसका नाम जिम था—हालाँकि आप पाएँगे कि आपके रविवारी स्कूल की किताब में बुरे लड़कों का नाम लगभग हमेशा ही जेम्स होता है। यह अजीब सी बात है मगर फिर भी यह सच है कि इस लड़के का नाम जिम ही था।

उसकी कोई बीमार माँ भी नहीं थी—जो धार्मिक हो और जिसे क्षय रोग हो, और जो कब्र में जाना चाहती हो और हमेशा के लिए चैन की नींद सो जाना चाहती हो, लेकिन जो अपने बेटे से बहुत प्यार करती हो और परेशान रहती हो कि उसके जाने के बाद यह दुनिया उसके बेटे के प्रति रूखी और निष्ठुर हो जाएगी। रविवारी पुस्तकों के अधिकांश बुरे लड़कों का नाम जेम्स होता है, और उनकी बीमार माँ होती है जो उन्हें "अब मैं स्वयं को अर्पित करता हूँ।" आदि कहने की शिक्षा देती हैं, जो उन्हें मीठी और उदास आवाज़ में लोरी सुनाती हैं और प्यार से चूमती हैं, और फिर बिस्तर के पास बैठकर रोती हैं। लेकिन इन जनाब की कहानी कुछ और ही थी। उसका नाम जिम था और उसकी माँ को कोई बीमारी नहीं थी—न तो क्षय रोग और न ही कोई और रोग, उल्टे वह कुछ हट्टी-कट्टी ही थी। और वह धार्मिक भी नहीं थी। इसके अतिरिक्त जिम को लेकर वह बहुत परेशान भी नहीं रहती थी। वह कहती थीं अगर जिम अपनी गर्दन भी तुड़ा बैठे तो कोई ज्यादा नुकसान नहीं होगा। वह हमेशा जिम को पिछवाड़े पर तमाचे लगाकर सुलाती थी और उसे प्यार से चूमती भी नहीं थी। उल्टे जब वह जाने वाली होती थी तो जिम के कानों पर घूँसे बरसाती थीं।

एक बार इस छोटे बुरे लड़के ने रसोई घर की चाबी चुराई और वहाँ चुपके से जाकर थोड़ा जैम खाया और फिर उस बर्तन को कोलतार से भर दिया, ताकि उसकी माँ को फ़र्क पता न चल सके। लेकिन यह सब करते हुआ एक बार भी अचानक उसके दिल में कोई भयानक सा अहसास नहीं हुआ, और उसे ऐसा भी नहीं लगा कि कोई चीज़ उससे फुसाफुसाकर कह रही है कि, "क्या अपनी माँ की आज्ञा का पालन न करना सही है? क्या यह पाप नहीं है? ऐसे लड़के कहाँ जाते हैं जो अपनी अच्छी दयालू माँ के जैम को सरपेट जाते हैं?" और फिर उसने अकेले में अपने घुटनों पर गिरकर फिर कभी बदमाशी न करने की कसम भी नहीं खाई, और हल्के और प्रसन्न हृदय के साथ उठकर अपनी माँ को सबकुछ बताने भी नहीं गया और न ही उसने माँ से माफ़ी माँगी और उसकी माँ ने आँखों में गर्व और आभार के आँसू लिए उसे आशीर्वाद भी नहीं दिया। जी नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ! यह तो किताबों के दूसरे बुरे लड़कों के साथ होता है। लेकिन बहुत ताज्जुब की बात है कि जिम के साथ यह सब बिल्कुल अलग तरीके से हुआ। उसने जैम खाया और अपने पापी और बेहूदे अन्दाज़ में कहा कि यह बहादुरी का काम था; फिर उसने उस बर्तन में कोलतार भी रखा और कहा कि यह भी साहसिक काम है, और फिर वह हँसा और उसने सोचा कि जब उस बुढ़िया को इसके बारे में पता चलेगा तो "वह उठेगी और चिल्लाएगी"; जब उसे पता चला तो जिम ने इसके बारे में कुछ भी पता होने से साफ़ इंकार कर दिया, और उसकी माँ ने उसकी बुरी तरह पिटाई की और रोने का काम उसने खुद ही कर लिया। इस लड़के की हर बात अजीब थी—किताबों के बुरे जेम्सों के साथ जो भी होता था वह इसके साथ नहीं होता था।

डाली। लेकिन उसी समय नगर के एक वृद्ध मैकवेल्टर वहाँ आ पहुँचे जो गुस्से से भरे हुए थे। सभी बुरे लड़के भाग निकले, लेकिन जैकब ब्लिवेंस सोची-समझी मासूमियत के साथ उठा और उसने रविवारी स्कूल की किताबों के उन छोटे भाषणों में से एक की शुरुआत की जो हमेशा "ओह, सर!" से शुरू होते हैं, हालांकि कोई भी लड़का, चाहे अच्छा हो या बुरा, कभी भी "ओह, सर!" से बोलना नहीं शुरू करता। लेकिन उस वृद्ध ने बाकी बचा भाषण सुनने का इन्तज़ार नहीं किया। उसने जैकब ब्लिवेंस को कान से पकड़कर घुमा दिया और उसके पिछवाड़े पर एक जोरदार चाँटा मारा। तत्काल ही वह अच्छा छोटा लड़का गोली की तरह निकला और छत फाड़कर सूरज की ओर उड़ चला, और उन पन्द्रह कुत्तों के टुकड़े उसके पीछे किसी पतंग की पूँछ की तरह लहराते निकल गए। और उस बूढ़े और उसे पुराने लोहे के ढलाईखाने का कोई नामोनिशान धरती पर नहीं बचा। जहाँ तक छोटे जैकब ब्लिवेंस का सवाल है, उसे अपनी तमाम मुश्किलों के बावजूद उस समय तक मरते समय वाला भाषण देने का मौका नहीं मिला, जब तक कि उसने पक्षियों को यह भाषण नहीं दिया। क्योंकि, हालाँकि उसका ज्यादा हिस्सा तो ठीक-ठाक तरीके से एक बगल के कस्बे में एक पेड़ के ऊपर आ गिरा, लेकिन उसका बाकी का हिस्सा चार कस्बों के इर्द-गिर्द बँट गया, और इसीलिए यह जानने के लिए कि वह ज़िन्दा है या मर गया और ऐसा कैसे हुआ, उन्हें पाँच जाँचें करनी पड़ीं। आपने कभी किसी लड़के को इतना बिखरा हुआ नहीं देखा होगा।*

इस प्रकार वह अच्छा छोटा लड़का मारा गया जिसने अपने बूते की हर चीज़ की, लेकिन कुछ भी किताबों के अनुसार नहीं हुआ। हर लड़का जिसने उसके जैसे काम किए वह समृद्ध हुआ, बस वही नहीं हो पाया। इस लड़के का मामला वाकई विलक्षण है। शायद इसका तुक कभी कोई नहीं समझ पाएगा।

(*फुटनोट : यह ग्लिसरीन तबाही का ब्योरा एक उड़ते अखबारी आइटम से उधार लिया गया है, जिसके लेखक का नाम पता चलने पर मैं आपको बता दूँगा। – (मा.ट.))

अनुवाद : अभिनव

एक बार वह किसान एकॉर्न के सेब के पेड़ पर सेब चुराने के लिए चढ़ा, और उसकी टाँग नहीं टूटी, और न ही पेड़ से गिरकर उसका हाथ टूटा, और फिर किसान के विशाल कुत्ते ने उसे नोचा-खसोटा भी नहीं, फिर वह कई सप्ताह तक बीमार और कमज़ोर सा बिस्तर पर पड़ा रहकर पछताया नहीं और न ही वह इन सब के बाद अच्छा बन गया। ओह! नहीं; उसने जी भर कर सेब चुराया और फिर सही सलामत नीचे उतर आया; और कुत्ते के लिए भी वह पहले से ही तैयार था, और जब वह उसे नोचने आया तो उसने ईंट खींचकर मारी और उसे गिरा दिया। यह बहुत ही अजीब बात थी—उन नरम छोटी चिकनी जिल्द वाली किताबों में ऐसा कुछ कभी नहीं होता, जिनमें लम्बे काले कोट, सुनहरी कढ़ाई वाली टोपी और छोटी पतलून पहने आदमियों और कमर पर हाथ रखे और बिना किसी छल्ले वाली औरतों की तस्वीरें होती हैं। किसी भी रविवारी स्कूल की किताब में ऐसा कुछ नहीं होता।

एक बार उसने अपने अध्यापक का छोटा चाकू चुरा लिया, और जब उसे पकड़े जाने का डर सताने लगा तो उसने वह चाकू बेचारी विधवा विल्सन के बेटे जॉर्ज विल्सन की टोपी के नीचे खिसका दिया। जॉर्ज विल्सन गाँव का नैतिक और अच्छा लड़का था जो हमेशा माँ का कहना मानता था, और कभी भी असत्य वचन नहीं कहता था, और जो अपने पाठों को बड़े चाव से पढ़ता था, और जिसे रविवारी स्कूल से गहरा प्यार था। और जब चाकू उसकी टोपी से गिरा तो बेचारे जॉर्ज ने अपना सिर झुका लिया और शर्म से लाल हो गया मानो उसने वाकई अपराध किया हो, और दुखी अध्यापक ने उसके ऊपर चोरी का इल्ज़ाम लगा दिया, और जब वह उसके काँपते कंधों पर बेंत बरसाने जा रहा था, तभी कोई सफ़ेद बालों वाला अप्रत्याशित शान्तिदूत अचानक प्रकट नहीं हुआ, और पूरे अन्दाज़ और अदा के साथ यह नहीं बोला, "इस नेक लड़के को छोड़ दो—वह खड़ा है दुबका हुआ अपराधी! मध्यावकाश के दौरान मैं स्कूल के दरवाज़े के पास से गुज़र रहा था, और अपने आपको अदृश्य कर मैंने यह अपराध होते स्वयं देखा था!" और फिर जिम को कोड़े भी नहीं पड़े, और फिर माननीय शान्तिदूत ने आँखों में आँसू भरे स्कूल को कोई उपदेश पढ़कर नहीं सुनाया और जॉर्ज को हाथ से पकड़कर यह नहीं कहा कि ऐसे लड़के को प्रतिष्ठित करना ज़रूरी है। न ही उस शान्तिदूत ने उसे अपने साथ आकर अपना घर बनाने और कार्यालय साफ करने, आग जलाने, और सन्देशवाहक बनने, लकड़ी काटने, कानून का अध्ययन करने, और घरेलू काम करने में उसकी पत्नी की मदद करने, और बाकी बचे समय में खेलने, और महीने में चालीस सेण्ट प्राप्त करने को नहीं कहा। जी नहीं; ऐसा किताबों में हो सकता था, लेकिन जिम के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ। बीच में टाँग अड़ाने वाले किसी शान्तिदूत ने बीच में आकर परेशानी नहीं पैदा की, और इसलिए आदर्श लड़के जॉर्ज की अच्छी तरह धुलाई हुई, और जिम को इससे काफ़ी खुशी हुई, क्योंकि आपको पता ही होगा कि जिम को नैतिक किस्म के लड़कों से नफ़रत थी। जिम ने कहा कि "ऐसे जनखे उफर पड़ें।" इतनी घटिया भाषा थी इस बुरे, उपेक्षित लड़के की।

लेकिन जिम के साथ सबसे अजीब घटना तब हुई जब वह रविवार को नाव पर घूमने गया और डूबा नहीं, और दूसरी बार जब वह रविवार को मछली पकड़ रहा था तो वह तूफ़ान में फँस गया लेकिन उसपर बिजली नहीं गिरी। ऐसा क्यों है कि आपका ऐसी किसी घटना से साबका नहीं पड़ता, भले ही आप आज से अगले क्रिसमस तक की सभी रविवारी स्कूल की पुस्तकों में देख लें, बार-बार देख लें। ओह नहीं; आप पाएँगे कि सभी बुरे लड़के जो रविवार को नाव पर घूमने जाते हैं वे निरपवाद रूप से डूब जाते हैं; और वे सभी बुरे लड़के जो रविवार को मछली मारने जाते हैं और तूफ़ान में फँस जाते हैं उनपर बिजली ज़रूर गिरती है। रविवार के दिन वे नावें निरपवाद रूप से ख़राब हो जाती हैं जिनपर बुरे लड़के सवार होते हैं, और जब ये बुरे लड़के रविवार को मछली पकड़ने जाते हैं तो निश्चित रूप से तूफ़ान में फँस जाते हैं। यह कम्बख़्त जिम हमेशा कैसे बच निकलता था यह अभी भी मेरे लिए एक रहस्य है।

इस जिम की ज़िन्दगी मज़ेदार थी—ऐसा ही रहा होगा। उसे कोई भी चीज़ चोट नहीं पहुँचा सकती थी। उसने पशुशाला में खड़े हाथी को एक चुटकी तम्बाकू तक सुंघा दी और फिर भी हाथी ने उसके सिर पर अपनी सूँड़ से चोट नहीं की। उसने पिपरमिण्ट के सार के लिए कपबोर्ड में खोजबीन भी की और उसने कोई गलती नहीं की और ऐक्वा फोर्टिस नहीं पी लिया। वह अपने पिता की बन्दूक चुराकर रविवार की छुट्टी के दिन शिकार पर गया और उसने तीन-चार उंगलियाँ नहीं उड़ा लीं। जब उसने गुस्से में अपनी बहन की कनपटी पर घूँसा मारा तो वह गर्मी के लम्बे दिनों में दर्द में तड़पती नहीं रही, और फिर अपने होंठों पर माफ़ी के वे शब्द लिए मरी नहीं, जिससे उसके टूटे हुए दिल की तकलीफ़ को दोगुना हो जाए। नहीं; उसने इस दर्द से निपटने में कामयाबी हासिल की। अन्त में वह भागकर समुद्र के किनारे चला गया, और फिर वापस नहीं आया और अपने आपको इस संसार में दुखी और अकेला पाया, क्योंकि उसके प्यारे परिजन अब चर्च के कब्रिस्तान में आराम कर रहे हैं, और खुशियों से भरा उसके बचपन का घर अब टूट-फूटकर नष्ट हो चुका है। अरे नहीं!; वह एक पाइपर की तरह नशे में धुत घर वापस आया, और तुरन्त हवालात पहुँच गया।

वह बड़ा हुआ और उसने शादी की और एक विशाल परिवार बनाया, और फिर एक रात एक कुल्हाड़े से उन सबका भेजा फाड़ डाला, और बेईमानी और बदमाशी की सभी तरकीबें आजमा कर अमीर हो गया; और अब वह अपने गाँव का नरक-योग्य, सबसे बदमाश और नीच व्यक्ति है, और हर जगह उसका सम्मान होता है और वह विधान सभा का सदस्य है।

तो आपने देखा कि किसी भी रविवारी स्कूल की किताब में कोई भी ऐसा बुरा जेम्स नहीं था जिसे आकर्षक जीवन वाले इस जिम की तरह किस्मत का वरदान प्राप्त हो।

अनुवाद : लता